ईश्वर से मिलाने वाला केवल एक ही विश्व विद्यालय...

पावन श्रेष्ठाचारी सुखमय भारत की पुनर्स्थापना विषय पर आयोजित सम्मेलन में अनेक संतों ने ब्रह्माकुमारीज़ को समाज के लिए प्रेरक बताया और उनकी ईश्वरीय सेवाओं की प्रशंसा की। ब्रह्माकुमारीज़ रिट्रीट सेंटर के दादी प्रकाशमणि सभागार में हुए इस सम्मेलन में साधु-संतों का भावपूर्ण सम्मान हुआ और उन्हें परमात्मा द्वारा सिखाए जा रहे राजयोग के बारे में जानकारी दी। महाशक्ति पीठ दिल्ली के महामंडलेश्वर सर्वानंद सरस्वती ने माना कि ब्रह्माकुमारीज़ देश धर्म और जाति से ऊपर उठकर परमात्मा की सेवा के साथ ही जनमानस की सेवा का कार्य कर रही है। उन्होंने स्वीकार किया कि पवित्रता के आधार से नई दुनिया की पुनर्स्थापना धर्म सत्ता ही कर सकती है। जिसके लिए हमें सिर्फ बाहर से नहीं बल्कि अंदर से साधु बनने की ज़रूरत है।

शंकर मठ रूड़की के स्वामी दिनेशानंद भारती ने कहा कि धर्म के मार्ग पर चलने वाले की रक्षा धर्म स्वयं करता है। उन्होंने श्रीमद्भगवद् गीता से सीख लेने की बात कही और ब्रह्माकुमारीज़ को श्वेत वस्त्रों की सन्यासी बताया। ऋषिकेश से आये महामंडलेश्वर स्वामी स्वतंत्रानंद महाराज ने कहा कि सम्मान उन्हीं का होता है जो जोड़ने का कार्य करते हैं।

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर भाई

हरि मंदिर पटौदी से महामंडलेश्वर स्वामी धर्मदेव ने कहा कि संतों की वजह से ही आज पूरे विश्व में भारत का नाम बड़े गौरव से लिया जाता है।

हिंदू रक्षा सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी प्रबोधानंद महाराज ने कहा कि सनातन धर्म एक मात्र ऐसा है जो सारे विश्व को परिवार मानता है।

अयोध्या से आये रसिक पीठाधीश्वर महंत जनमेजय शरण महाराज ने कहा कि पूरे विश्व में ईश्वर से मिलाने वाला केवल एक ब्रह्माकुमारीज़ विश्व विद्यालय है। हरिद्वार से आये महामंडलेश्वर स्वामी यमुनापुरी महाराज ने कहा कि मनुष्य का जन्म ही धर्म के साथ होता है। इसलिए मनुष्य को धर्मार्गी होना चाहिए।

कटनी मध्य प्रदेश से पधारे युवा संत आचार्य परमानंद महाराज ने कहा कि जब तक हमारी मानसिक शुद्धि नहीं होगी तब तक सनातन धर्म पुनर्स्थापित नहीं हो सकता। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ बहनों को मनुष्य के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने वाली देवियां बताया।

महर्षि भृगु पीठाधीश्वर गोस्वामी सुशील महाराज ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की कथनी और करनी एक समान है। दिल्ली एनसीआर के संत महामंडल की अध्यक्षा महामंडलेश्वर स्वामी विद्यागिरी महाराज ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनें नारी शक्ति को जगाने का सराहनीय कार्य कर रही हैं। जो दुनिया के लिए प्रेरक है।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के महासचिव राजयोगी बृजमोहन भाई ने संतों का स्वागत करते हुए कहा कि परमात्म प्रेम ही वास्तव में सत्य है। उन्होंने परमात्मा के निराकार स्वरूप की व्याख्या की। ओआरसी की निर्देशिका राजयोगिनी आशा दीदी ने बताया कि ब्रह्मा बाबा सदा ही साधु-संतों का सम्मान करते थे। वे भी चाहती हैं कि साधु-संतों की सेवा का उन्हें भी सौभाग्य मिलता रहे।

कार्यक्रम में दिल्ली पहाड़गंज से महामंडलेश्वर स्वामी हरिओम महाराज, मुंबई से आए महामंडलेश्वर स्वामी प्रेमानंद गिरी महाराज, ऋषिकेश योग धाम ट्रस्ट के अध्यक्ष योगीराज प्रणव चैतन्य महाराज, गुरू गोरक्षनाथ आश्रम रूड़की के पीठाधीश्वर योगी सागरनाथ ने भी अपने विचार रखे। देशभर से आये अनेक साधु-संत महात्माओं सहित धार्मिक क्षेत्र से जुड़े लोगों ने इस सम्मेलन में काफी संख्या में भागीदारी निभाई। साधु-संतों के इस समागम से नई आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार हुआ है। संतों ने जीवन में आध्यात्म की पुनर्स्थापना के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के प्रयासों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की जा रही है। संतों की त्याग, तपस्या और पवित्रता के साथ-साथ ब्रह्माकुमारीज़ का राजयोग सामाजिक परिवर्तन में कारगर होगा। आज सारा विश्व मानता है कि हमारे जीवन में आध्यात्मिकता की कमी है। लेकिन वास्तव में आध्यात्मिकता क्या है जिस पर हम कह सकते हैं कि आत्मा और परमात्मा का ज्ञान ही आध्यात्मिकता है। यदि जीवन में उन्नति चाहिए तो ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग को सीखकर और उसका नियमित अभ्यास करना चाहिए। राजयोग इतना सहज है कि जितनी भी आपकी बुद्धि भटकती है वह स्थिर हो जाएगी। यह कोई चमत्कार नहीं है बल्कि राजयोग एक परिपक्व विधि है। जिसके माध्यम से हम पतित से पावन बन सकते हैं। इस साधु-संत महासम्मेलन में अहिंसा परमो धर्म युक्त लक्षण पर चर्चा होने के साथ ही आध्यात्मिक पतन धर्म ग्लानि तथा शिव परमात्मा के धरती पर अवतरण का उचित समय अभी ही है, जोकि पूरी वसुंधरा को पुनः पावन कर सतयुग स्थापित कर रहे, इसकी जानकारी राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी ने बहुत ही तार्किकता से स्पष्ट किया। और गीता के भगवान निराकार शिव के सम्बन्ध में भी बताया।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

मन-बुद्धि-संस्कार यह सब ऑर्डर में रहे या नहीं रहे, यह रोज़ बाबा को सुनाओ। तो आपेही अपनी दरबार लगाओ। चेक एंड चेंज, यह दो शब्द याद रखो।

मालिक होकर कर्मेन्द्रियों को चलाना इसकी आवश्यकता

क्या! कल्प पहले भी मैं ही बनी थी! मैं ही तो हूँ! यह याद रखों, मैं ही क्यों! क्योंकि बाबा ने हमको पहचान करके निकाला है। दुनिया वाले बाबा को पहचान नहीं पाते हैं। बाबा ने आपको ढूंढा है ना। आपको तो पता ही नहीं था भगवान है क्या! लेकिन बाबा ने आप सबको कहाँ-कहाँ से ढूंढ निकाला है। भगवान की नज़र मेरे ऊपर पड़ी, यह अभी यहाँ जो शिक्षा मिल रही है उसमें अटेन्शन देकर उनको प्रैक्टिकल में लाना ही है। सुना और समाया। ऐसे नहीं सुनने में तो अच्छा लगा, वहाँ जायेंगे तो सरकमस्टांस आयेंगे, ऐसे नहीं। पहले अपने आप में ही फेथ रखो। अरे मैं नशा रखो। भगवान को हम ही पसन्द आये, यह फखुर हो, अभिमान नहीं।

तो आप जितना भी आगे बढ़ना चाहो, बढ़ सकते हो क्योंकि अभी टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है, लेट का लगा है। बस अपने को मालिक समझकर कर्मेन्द्रियों को चलाओ। राजा बच्चा बनना है, राजा किसको कहा जाता है? जिसमें रूलिंग, कन्ट्रोलिंग पॉवर हो। मैं आत्मा मालिक हूँ ना, तो मालिक होकर कर्मेन्द्रियों को चलाना इसकी आवश्यकता है।

बाबा से जो भी खज़ाने मिले हैं उनको ईमानदारी से यूज़ करना है। एक बाप के सिवाए कहाँ आँख न जाये, ऐसा वफादार। जो बाबा का फरमान मिले, उसमें फरमानबरदार हो। जो अभी रोज़ की मुरली है, वो आप लोगों के लिए भी वही है और 72 वर्ष वालों के लिए भी वही है। जो रोज़ श्रीमत मिलती है, बस आप सवेरे से रात्रि तक मुरली के विधि प्रमाण चलो। और कुछ सोचो नहीं, यह बहुत इज़ी है। आज बाबा ने यह कहा है, मुझे यह करना है। बाबा डायरेक्शन देता है माना श्रीमत देता है और कोई बात न सोचकर रोज़ की मुरली आप प्रैक्टिकल में लाओ, तो आप नम्बरवन हो सकते हो। बाबा को रात्रि को खुशखबरी सुनाओ। बाबा भी रोज़ की मन दरबार की डायरी लिखता था। मन-बुद्धि-संस्कार यह सब ऑर्डर में रहे या नहीं रहे, यह रोज़ बाबा को सुनाओ। तो आपेही अपनी दरबार लगाओ। चेक एंड चेंज, यह दो शब्द याद रखो। सिर्फ चेक नहीं करना, चेक के साथ चेंज भी करना। किस शक्ति की कमी है, जिस कारण मैं दिनचर्या श्रीमत अनुसार नहीं रख सकी क्योंकि पेपर तो आयेगा ना। शक्तियां तो बाबा ने सबको एक जैसी दी हैं, तो चेक करो और चेंज करो।

शक्ति है मेरे में या नहीं, जिस शक्ति को ऑर्डर करती हो वो समय पर आती है? अगर नहीं, तो शक्ति ऑर्डर में नहीं रही ना। तो यह चेक करो मानों कोई समय ऐसा आता है, जब आपको सहन शक्ति चाहिए। आप मालिक होकर साक्षीपन की सीट पर बैठकर ऑर्डर करो और चेक करो तो वो शक्ति मददगार बनी या नहीं? कई बच्चों को बिन्दु लगाने के बजाए आश्चर्य की या क्वेश्चन की मात्रा लग जाती है। तो ऑर्डर में रहना, सत्यता की निशानी है, जो सत बाप है, सर्वशक्तिवान है उनके हम मास्टर सर्वशक्तिवान बनकर रहें - यह है सत्यता की शक्ति।

हमारे कर्म औरों के लिए दर्पण बन जायें

हम सबको पता है कि अभी यह पतित पुरानी दुनिया विनाश हुई पड़ी है और नई दुनिया स्थापन करने के लिए हम आत्मा भी सतोप्रधान, शरीर भी सतोप्रधान, तत्व भी सतोप्रधान बन रहे हैं। प्रैक्टिकली हरेक अनुभव करें, बाबा सर्वशक्तिवान है, ज्ञान का सागर है। बाबा प्यार का सागर, सुख का सागर भी है। इतना भी बुद्धि में आ गया, तो सागर के कण्ठे पर कितना अच्छा है क्योंकि शीतल वायु बहुत अच्छी है। तो क्लास में आना भी सागर के कण्ठे पर आना है, साइलेन्स में वॉक करना, साइलेन्स में बाबा की बातें सुनना, इससे कितना सुख मिलता है। समर्पण वो जिसके कर्म दर्पण जैसे हों। हम सबके सामने बाबा हमारा दर्पण है। फिर हमारा कर्म ऐसा हो जो औरों के लिए दर्पण बन जाये क्योंकि कर्म बड़े बलवान हैं, परमात्मा सर्वशक्तिवान है। श्रेष्ठ कर्म करने से अच्छी शक्ति आयेगी। बाबा कहता है सिर्फ अंगुली दे दो बस, लेकिन अंगुली हाथ के बगैर तो आयेगी नहीं। तो हाथ भी आ गया, हाथ हार्ट के बगैर नहीं आयेगा, होशियार है भगवान, फिर गले लगा लिया। लेकिन बुद्धि समर्पण होती है दिल से, दिल में सच्चाई नहीं है तो बुद्धि ठीक काम नहीं करती है।

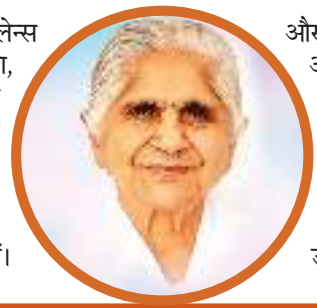
राजयोगिनी दादी जानकी जी

आठ शक्तियों में परखने की शक्ति नम्बरवन है। यह राइट है, रॉन्ग है, समेट लिया या समा लिया। जिसको परखने की शक्ति नहीं है वो जौहरी नहीं है, अनाड़ी है। जौहरी की आँख तेज हो, दृढ़ता की शक्ति हो और एक परमात्मा से प्यार हो। सौदा ऐसा हो। मेरे लिए यह ज्ञान रत्न हैं, वैल्यू उसकी है। उन्हें परखने वाले हम बाबा के रत्नागर बच्चे हैं। उनसे फिर सेवा ऐसे होगी जैसे जादूगर। एक सेकण्ड में क्या से क्या बन जाता है और क्या बना देता है। कल हम क्या थे, आज बाबा ने कैसा बना लिया। कल का आया हुआ बच्चा भी बदल जाता है। समझ लिया ना, यह ज्ञान रत्न हैं।

नियत साफ मुराद हासिल, सारी वैल्यू नियत पर है। नियत में दिल की भावना भी आती है। सच्ची है या नहीं है। कहते हैं इसकी नियत ठीक नहीं है, सम्भालना। इसके सूक्ष्म वायब्रेशन आते हैं। तो हम अपनी नियत देखें। हैवान और इन्सान। अन्दर की दुनिया कुछ और है और बाहर की दुनिया कुछ और। अपने से पूछो कि अन्दर की दुनिया हमारी कैसी है। जिसकी नियत अच्छी है, उसकी अन्दर की दुनिया कैसी होगी! हम क्या देखें? बड़ी-बड़ी बिल्डिंग हैं, उसमें है ही क्या! शीशा, गिरेगा तो क्या होगा! वो दुनिया को क्या समझते हैं और हम दुनिया को क्या समझते हैं। ऐसी दुनिया में हम कैसे रहें? ऐसी दुनिया में धन्धा भी करना है, बाल-बच्चों को भी सम्भालना है। बाबा कहता है ऐसी दुनिया में रहते हुए निमित्त मात्र रहो, किसी को अपना नहीं समझो, अपना समझ किसी में लगाव नहीं रखो। ऐसे रहने से जिनके साथ रहेंगे उनका कल्याण होगा।

हम कल्याण भाव से रहते हैं, बाकी और कोई भाव नहीं है। कुछ नहीं चाहिए, अन्दर से दिखाई पड़े कि इतना इसको वैराग्य है। देह के भान से परे। अभिमान तो नहीं है, कोई दुःख-सुख का प्रभाव तो नहीं है! तो दुनिया में रहते पश्चाताप नहीं करना है। ऐसा नहीं पहले खा लो फिर रो लो। यहाँ तो पाप की दुनिया है, पीस का तो देवाला है। प्यार तो है ही नहीं। ऐसे में रहते उन्हों को बदलने के लिए रहो और हमारे पास अन्दर बहुत कुछ है उनको बदलने के लिए। इसका अभिमान नहीं है, पर है। चलन हमारी ऐसी हो, सदा ही महान आत्मा की तरह मेहमान होकर रहें।

हम निमित्त बनने वाले बच्चो का कभी मूड ऑफ नहीं होना चाहिए। अगर मूड ऑफ करके किसी को मुरली सुनाते, गद्दी पर बैठते तो

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

इन रस्सियों को भी इस यज्ञ में स्वाहा करो...

बहुत बड़ा पाप चढ़ता है। अपने बड़े से कभी भी न उम्मीद नहीं बनना है। सदा स्वमान में रहना है। ऐसे कभी नहीं सोचो यह तो मेरे पुराने संस्कार हैं। यह सोचना भी उसकी पालना करना है। पुराना संस्कार झूठा भोजन है। फिर क्या उस झूठे भोजन का भोग बाबा के सामने रखेंगे। मेरा तो दिव्य संस्कार हो, ईश्वरीय संस्कार हो। बहुत समय से पाले हुए संस्कार हैं उन सब संस्कारों को जीरो देने का दृढ़ संकल्प करो। रियलाइज़ कर उन्हें खत्म करो। व्यर्थ संकल्प तभी खत्म होंगे जब व्यर्थ संकल्प खत्म होंगे। हमने नई गोद ली, हमारा नया जन्म है। हम ब्रह्माकुमार हैं तो यह परिवर्तन करो।

कोई भी किसी में पुरानी आदत हो, प्लीज़ उसे समाप्त करो। बाबा की लगन, बाबा की मस्ती उसी धुन में रहो। अपने को दुआओं के आधार पर चलाओ। बाबा की दुआयें लेते चलो। मुझे हर आत्मा से दुआ ज़रूर मिलनी चाहिए। दुआयें हमारा प्यार हैं, प्यार ही हमारी दुआयें हैं। जहाँ सर्व का मेरे से, मेरा सर्व से प्यार है वहाँ मेरे बाबा की दुआयें हैं। इससे ही मुझ आत्मा की उन्नति है। यह हमारा अन्तिम जन्म, अन्तिम घड़ी है, किसी की हमारे ऊपर दुआ नहीं है तो उससे किसी की तरह दुआयें ज़रूर लेना है।

हम बच्चे जो बाबा के पास स्वाहा हुए हैं उनमें अनुमान, मूड ऑफ, परचिन्तन, ईर्ष्या, द्वेष आदि की रस्सियां नहीं होनी चाहिए। इन रस्सियों को भी इस यज्ञ में स्वाहा करो। यही सच्चा मंगल मिलन है।

जहाँ नियम है वहाँ संयम है। जहाँ कायदा है वहाँ फायदा है। ईश्वरीय मर्यादा ही हमारा स्वधर्म है। सबसे प्रेम करो लेकिन प्यार मत दो, बाबा से सम्बन्ध जुटाओ स्वयं से नहीं। हल्का व्यवहार मत करो। गम्भीर रहो। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का नियम है, दूर बाज, खुश बाज रहो... हँसी से बात न करो। काम से काम बस।